

---

shivachAmarastuti

शिवचामरस्तुतिः

Document Information

---

Text title : Shivachamara Stuti

File name : shivachAmarastutiH.itx

Category : shiva

Location : doc\_shiva

Transliterated by : Sunder Hattangadi

Proofread by : Sunder Hattangadi

Description/comments : See shivashankarastotram for expanded version

Latest update : December 18, 2021

Send corrections to : [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 28, 2021

*sanskritdocuments.org*

---

## शिवचामरस्तुतिः



अतिभीषणकटुभाषणयमकिङ्किरपटली  
कृतताडनपरिपीडनमरणागमसमये ।  
उमया सह मम चेतसि यमशासन निवसन्  
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम् ॥ १ ॥

अतिदुर्नय चटुलेन्द्रिय रिपु सञ्चय दलिते  
पवि कर्कश कटु जल्पित खलगर्हण चलिते ।  
शिवया सह ममचेतसि शशिशेखर निवसन्  
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम् ॥ २ ॥

भवभङ्गन सुररङ्गन खलवञ्चन पुरहन्  
दनुजान्तक मदनान्तक रविजान्तक भगवन् ।  
गिरिजावर करुणाकर परमेश्वर भयहन्  
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम् ॥ ३ ॥

शक्रशासन क्रतुशासन चतुराश्रम विषये  
कलि विग्रहभवदुर्ग्रहरिपुदुर्बल समये ।  
द्विज क्षत्रिय वनिताशिशुदर कम्पित हृदये  
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम् ॥ ४ ॥

भव सम्भव विविधामय परिपीडित वपुषं  
दयितात्मज ममताभर कलुषीकृत हृदयम् ।  
कुरु मां निज चरणार्चन निरतं भव सततम्  
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम् ॥ ५ ॥

इति शिवचामरस्तुतिः समाप्ता ।

The expanded version that includes the verse refrain is  
the shrIshivashankarastotram.



*shivachAmarastuti*

pdf was typeset on December 28, 2021



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

